E-Learning Study Material

By Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA, BIHAR
VKS UNIVERSITY, ARA

B.A. Part three Economics Hons
Paper- Six

Criticism of the New Deal Policy of USA. :- उपरोक्त तालिका में विभिन्न सूचनांको को दर्शाया गया है लेकिन इस बीच विश्व की आर्थिक स्थिति में भी पर्याप्त परिवर्तन हो रहा था। सन् 1936 में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सूचकांक सन् 1929 के स्तर से केवल 7½ अंक (point) ही नीचे था। अतः यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि इस सुधार में न्यूडील का कितना हाथ था तथा विश्व की शक्तियों का कितना हाथ था क्योंकि दोनों ही साथ साथ सक्रिय थे।

न्यूडील कार्यक्रम का एक दुखदा पक्ष भी है। इसे संचालित करने में बहुत अधिक व्यय हुआ जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) का राष्ट्रीय ऋण जो सन् 1933 में लगभग 19500 मिलियन डालर था, बढ़ कर सन् 1937 में 36000 मिलियन डालर हो गया। इतनी वृहद मात्रा में सार्वजनिक

ऋण: भविष्य में स्वयं सरकार एवं देशवासियों के लिए समस्या बन गया। दूसरी बात यह है कि उत्पादन तथा मूल्य में वृद्धि के बावजूद बेरोजगारों की संख्या बहुत अधिक लगभग एक करोड़ थी जिसके सहायता पर भी सरकारी व्यय बहुत अधिक था। इन कारणों से आलोचकों ने मुख्य रूप से रूजवेल्ट की नीति को विफल बताया।

किन्तु उपर्युक्त आलोचनाओं (Criticisms) के बावजूद यह कहा जा सकता है कि न्यूडील नीति ने अमेरिकी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में कुछ महत्वपूर्ण एवं स्थायी परिवर्तनों का सूत्रपात किया जिसमें निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय है —

1. न्यूडील ने अर्थव्यवस्था में आयोजना एवं केन्द्रीय नियंत्रण के लिए वातावरण तैयार किया।
2. न्यूडील के द्वारा आर्थिक समृद्धि की पुन: व्यवस्था करने के लिए अधिनियमों का उचित उपाय ढूंढ निकाला गया।
3. न्यूडील नीति ने एक नवीन आर्थिक दर्शन का सूत्रपात किया जो मुख्यतया केन्स के सिद्धान्तों पर आधारित था।
4. न्यूडील ने मौद्रिक, वित्तीय एवं बैंकिंग व्यवस्था में अनेक महत्वपूर्ण सुधार किया वस्तुत:
   न्यूडील ने सभी को मंदी के प्रति सजग कर दिया।
5. न्यूडील ने देश में कुछ सामाजिक परिवर्तन भी किया और अमेरिका के लोग अब अपने देशवासियों की भलाई के लिए चिन्तित रहने लगे। सामाजिक

सुरक्षा की समुचित व्यवस्था में जनता का विश्वास बढ़ने लगा और फलस्वरूप सामाजिक कल्याण के अनेक कार्यों का सूत्रपात भी हुआ। इसीलिए रूजवेल्ट ने कहा था, 'न्यू डील ने सामाजिक प्रगति की सीमा का विस्तार किया (New Deal extended the frontiers of Social Progress)।

जब फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट जब अमेरिका के राष्ट्रपति-पद पर आसीन हुए थे तो उस समय उनके समक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न था - 'क्या पूँजीवाद बचा रह सकता है" (Can Capitalism survive?) राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने जिन नीतियों का प्रयोग किया उनका उद्देश्य महान संकट को दूर भी करना था और उनके पुनरावर्तन को रोकना भी था। ये नीतियाँ विनियमकारी (Regulative) भी थी और विकासीय भी। उन्होंने पूँजीवाद की रक्षा करने का प्रयत्न किया और साथ ही उसमें रोक लगा कर उसे सुदृढ़ करने तथा समुदाय के निर्बल वर्गों को सहायता देकर पूँजीवाद में सुधार करने का भी प्रयास किया। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ~~तत्कालीन~~ तत्कालीन आर्थिक विचारधाराओं से बहुत ही प्रभावित थे। वस्तुतः उन्होंने अर्थशास्त्र के प्राध्यापकों के एक समूह से अपने को

घेर रखा था जिन्हें आलोचकों ने मस्तिष्क प्रन्यास (Brain Trust) की संज्ञा दी थी। उस समय लार्ड केन्स के प्रति व्यापार-चक्रीय हीनार्थ प्रबन्धन (Counter-Cyclical deficit financing) सम्बन्धी विचारों की प्रधानता थी और बड़े पैमाने पर उन विचारों का व्यवहारत: परीक्षण किया गया। केन्स का सिद्धान्त था कि बेकारी की गंभीर समस्या अत्यधिक बचत और कम निवेश के फलस्वरूप उपस्थित होती है। इसका समाधान सरकारी निवेश में वृद्धि करके किया जा सकता है। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने भी ऐसा ही किया।

अत: संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) के आर्थिक इतिहास में न्यू डील ने एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया। इसने पूँजीवादी व्यवस्था और अनुचित प्रतियोगिता में निहित बुराइयों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया। आर्थिक क्षेत्र में सरकारी नियंत्रण और हस्तक्षेप को अवांछनीय मानने वाले विचारक आज भी न्यू डील के कारण के संबन्ध में अपने विचारों संशोधन ~~करने में लगे हैं~~ करने में लगे हैं।